12. यौन सम्बन्धी रोग
(Sexually Transmitted Diseases)

ऐसे रोग जो मुख्यतः यौन सम्पर्क (Veneral Diseases) के कारण फैलते हैं गुप्त या यौन रोग कहलाते हैं। ये रोग कई प्रकार के होते हैं। इस अध्याय में हम एड्स (AIDS), गोनोरिया (Gonorrhoea), सिफिलिस (Syphillis) आदि के बारे में पढ़ेगें।

I एड्स (AIDS - Acquired Immuno Deficiency Syndrome) :

एड्स यानि कि उपार्जित प्रतिरक्षा नाशक रोग समूह, जिसका अर्थ है कि एड्स मनुष्य जाति में स्वाभाविक रूप से शुरू नहीं हुआ बल्कि मनुष्य जाति के अपने ही कुछ कर्मों के कारण उपार्जित हुआ। यह एक संक्रामक रोग है जो कि **एच.आई.वी.** (ह्यूमन इम्यूनो डेफिशियेन्सी वायरस) नामक विषाणु के संक्रमण के फलस्वरूप होता है। जब यह विषाणु शरीर में प्रवेश कर जाता है तो रक्त में पहुंच कर रक्त के सफेद कणों में मिलकर उसके डी.एन.ए. में पहुंच जाता है जहां वह विभाजित होता है और रक्त के सफेद कणों पर आक्रमण करता है। धीरे–धीरे यह सफेद कणों की संख्या बहुत कम कर देता है। उसी कमी या समाप्ति के साथ शरीर की रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता को समाप्त करता है। यह विषाणु शरीर में प्रवेश करने के बाद समाप्त नहीं होता। यू.एन. एड्स के अनुसार वर्ष 2002 के अंत तक एच.आई. वी. के साथ जी रहे लोगों की संख्या 4.2 करोड़ तक पहुंच चुकी है और हर गुजरता दिन इस संख्या में एच.आई.वी. से संक्रमित 15,000 और नये लोग जोड़ जाता है। सबसे ज्यादा जोखिम में युवा पीढ़ी है, क्योंकि आधे से ज्यादा एचआईवी से संक्रमित लोग 15 से 24 साल के बीच की उम्र के हैं।

आज दुनिया का कोई भी देश एच.आई.वी. की मार से नहीं बचा है। भारत में एच.आई.वी. के साथ जी रहे लोगों की संख्या 40 लाख तक पहुँच गई है और अब तो हालत यह है कि हर गुजरते मिनिट के साथ एक भारतीय एच.आई.वी. से संक्रमित हो जाता है। इसकी चिकित्सा व बचाव का टीका अभी तक विकसित नहीं हो पाया है। हालाँकि इस दिशा में विश्व भर में अनुसंधान चल रहे हैं। यदि इस रोग पर काबू नहीं पाया गया तो समस्त मानव जाति नष्ट हो सकती है अतः इस रोग को समझना, समझाना, बचना व दूसरों को बचाना ही महत्त्वपूर्ण परिचर्या है। एच.आई.वी. के संक्रमण से मनुष्य के शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता खत्म हो जाती है। परिणामस्वरूप एड्स रोगी को कई तरह के अवसरवादी संक्रमण हो जाते हैं जिनसे तरह–तरह की बीमारियाँ हो जाती हैं। रोगी का शरीर इन बीमारियों से लड़ नहीं पाता

असुरक्षित यौन सम्बन्ध

असुरक्षित रक्त

असुरक्षित सिरिंज

संक्रमित गर्भवती माँ

है और अंत में ये संक्रमण मौत का कारण बन जाते है।

एच.आई.वी. संक्रमण उन चोरों के समान है जो कि शरीर की रक्षा करने वाले प्रतिरक्षा तत्त्वों पर अपना आक्रमण करते हैं और उन प्रतिरक्षा तत्त्वों रूपी पुलिस थानों को ही अपना अड्डा बना लेते हैं। खून के परीक्षण से एच.आई.वी. संक्रमण का पता लगाया जा सकता है। विषाणुओं से संक्रमित व्यक्ति को **एच. आई.वी. पॉज़िटिव** कहते हैं। एच.आई.वी. पॉज़िटिव व्यक्ति कई वर्षों (6–10 वर्ष) तक सामान्य प्रतीत हो सकता है और सामान्य जीवन व्यतीत कर सकता है लेकिन इस अवधि में वह दूसरों को यह बीमारी फैलाने में सक्षम होता है। अतः ऐसे व्यक्ति को कुछ सावधानियाँ बरतनी चाहिये ताकि वह अपने जीवन–साथी व बच्चों में यह रोग न फैला सके तथा स्वयं को भी अवसरवादी संक्रमणों से बचा सके। एच.आई.वी. पॉज़िटिव का मतलब एड्स नहीं है, लेकिन इसके विषाणु द्वारा संक्रमण शरीर में पहुँच चुका है और 6 से 10 साल के समय में एड्स विकसित होने लगती है यानि कि व्यक्ति में जब मिश्रित बीमारियों के लक्षण नजर आने लगे तब इस अवस्था को **एड्स** कहते हैं।

एड्स के रोगी में वजन घटना, बुखार, दस्त लगना, खाँसी, चर्म रोग तथा अनेक प्रकार की बीमारियाँ जैसे टी.बी., निमोनिया, कैन्सर इत्यादि देखे जा सकते हैं।

एच.आई.वी. संक्रमण निम्न कारणों से फैलता है :

- असुरक्षित यौन संबंध से।
- बिना जाँचा हुआ संक्रमित रक्त रोगी को चढ़ाने से।
- संक्रमित सिरिंज एवं सुई के उपयोग से।
- संक्रमित व्यक्ति के अंग प्रत्यारोपण से।
- एच.आई.वी. संक्रमित माँ के होने वाले बच्चे व स्तनपान से।

उपरोक्त एच.आई.वी. फैलाने वाले बिन्दुओं के साथ–साथ यह भी जान लेना आवश्यक है कि एच. आई.वी. किन से नहीं फैलता है ताकि एड्स रोगी अपने आपको एकदम अलग–थलग महसूस कर हीन भावना का शिकार न हो।

एच.आई.वी. निम्न कारणों से नहीं फैलता हैं :

- एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति के साथ दैनिक प्रयोग की वस्तुओं जैसे टेलीफोन, किताबें, पेन आदि का सहभागी प्रयोग करने से।
- शारीरिक स्पर्श जैसे हाथ मिलाना, छूना, साथ उठना–बैठना व आस–पास खड़े होने से।
- सुरक्षित यौन सम्बन्ध
- एक ही ऑफिस, कारखानों में साथ–साथ काम करने से, उपकरणों को मिलकर प्रयोग करने से।
- साथ–साथ खाने–पीने तथा प्लेट, गिलास या अन्य बर्तनों का मिलकर प्रयोग करने से।
- सार्वजनिक स्नानघर या शौचालय का प्रयोग करने से।

शारीरिक स्पर्श | साथ-साथ काम करने | खाँसने या छींकने | कीट पंतगों

- हवा में खाँसने, छींकने से।
- कीट पतंगों, मच्छर, जूं, खटमल के काटने व मक्खी आदि से।

एड्स से बचाव :

इस रोग का कोई उपचार व टीका उपलब्ध नहीं है, अतः रोग के कारणों से बचकर ही शत–प्रतिशत बचाव किया जा सकता है :

- जीवन साथी के अलावा किसी अन्य के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित नहीं करना चाहिये। यौन रोगियों के साथ यौन सम्पर्क नहीं करना चाहिये।
- यौन सम्पर्क के समय नियमित निरोध (कन्डोम) का प्रयोग करना चाहिये।
- मादक औषधियों के आदी व्यक्तियों द्वारा सुई व सिरिंज का साझा प्रयोग नहीं करना चाहिये।
- कम से कम बीस मिनट पानी में उबाली सुई व डिस्पोज़ेबल सिरिंज (नष्ट करने योग्य) ही काम में लेनी चाहिये।
- एड्स से पीड़ित महिलाओं को गर्भ धारण नहीं करना चाहिये या फिर डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिये। आजकल ऐसी दवाएँ उपलब्ध हैं जिससे एच.आई.वी संक्रमित महिला के गर्भ में पल रहे शिशु में एच. आई.वी. की सम्भावना काफी कम की जा सकती है।
- रक्त की आवश्यकता होने पर एच.आई.वी. की जाँच किया रक्त ही ग्रहण करना चाहिये।
- किसी का इस्तेमाल किया हुआ ब्लेड काम में नहीं लेना चाहिए।
- शरीर में गोदना गोदने एवं नाक व कान छेदने के लिये काम आने वाले उपकरणों को भी कीटाणु रहित करके ही प्रयोग में लेना चाहिये।
- संदेह होने पर एच.आई.वी. जाँच करवानी चाहिये। सरकारी अस्पतालों में सिर्फ 10 रु. का शुल्क लेकर इसकी जाँच की जाती है।

एड्स से सम्बन्धित जानकारी न केवल ग्रसित या उसके परिवार के सदस्यों अपितु सभी को जन संचार माध्यमों द्वारा देनी चाहिये ताकि इस रोग से बचा जा सके।

यदि व्यक्ति एच.आई.वी. संक्रमित है या उसे एड्स हो गई है तो उसे मुख्य रूप से दो बातों का ध्यान रखना चाहिये। प्रथम बात तो यह कि वो किसी और व्यक्ति को संक्रमित न करे तथा वो स्वयं किसी अन्य बीमारी से संक्रमित न हो। एड्स का अन्त दर्दनाक मौत ही है क्योंकि इस रोग की न तो कोई दवा है, न कोई टीका और न ही इसका कोई इलाज। **एड्स से बचाव ही उपचार है।**

हमारे देश में इस रोग के फैलने की गति को कम करने, इस रोग से होने वाले संक्रमण व मृत्युदर को कम करने, इस संक्रमण से सामाजिक व आर्थिक स्तर पर प्रभाव कम करने तथा इस रोग के प्रति लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिये, 1987 से राष्ट्रीय एड्स नियन्त्रण संस्थान कार्यरत है।

II सिफिलिस (Syphilis):

सिफिलिस यौन सम्बन्धी रोग है जो कि एक विशेष प्रकार के जीवाणु (बेक्टिरिया) ट्रेपोनिमा पैलीडम (Treponema Pallidum) से होता है। यह रोग सिफिलिस रोग से ग्रसित व्यक्ति से यौन सम्पर्क स्थापित करने से फैलता है। यह एक लम्बी अवधि का रोग है जो कि प्रथम दो वर्ष में संक्रमणशील होता है।

ट्रेपोनिमा पैलीडम का विकास काल 14–28 दिन का होता है। यह रोग निम्न प्रकार से होता है।

1. उपार्जित (Acquired): सिफिलिस की निम्न अवस्थाएं होती हैः

अ. प्राथमिक अवस्थाः इसमें संक्रमण वाले स्थान पर व्रण या धाव जिन्हें "शेंकर्स" कहते हैं उत्पन्न हो जाते हैं। पुरूषों में यह अधिकतर जननेन्द्रिय के अंतिम भाग की त्वचा व स्त्रियों में योनि या गर्भाशय की ग्रीवा पर संक्रमण होता है और फिर यह एक दर्दनाक घाव/व्रण में बदल जाता है। इस अवस्था में यदि ध्यान रखा जाए तो ये व्रण बिना किसी विशेष उपचार से ठीक हो जाते हैं।

ब. द्वितीय अवस्थाः यह अवस्था व्रण विकसित होने के 6–8 दिन बाद होती है। इसमें व्यक्ति के सिर में दर्द तथा हथेली, पैर के तलूए व बाजुओं में घाव होने लगते हैं। ये घाव सफेद, सिकुड़े तथा लाल किनारी वाले होते हैं।

स. अंतिम अवस्थाः इस अवस्था को विकसित होने में करीब दस वर्ष की अवधि लगती है। इसमें त्वचा, हड्डियाँ व अन्य अंग प्रभावित होते हैं। इसमें घाव दानेदार हो जाते हैं। अंतिम चरण तक पहुँचने तक काफी समय लगता है परन्तु इस वक्त तक नस एवं हदय भी संक्रमित होने लगते हैं तथा अंत में व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

2. जन्मजात (Congenital)

इस प्रकार के सिफिलिस रोगी में प्रारम्भिक अवस्था उत्पन्न नहीं होती है। यह बीमारी, संक्रमित माता के गर्भाशय से शिशु में प्रवेश कर जाती है। यह रोग अत्यधिक उग्र प्रकृति का होता है तथा कई बार शिशु की गर्भाशय में ही मृत्यु हो जाती है। यदि शिशु बच जाता है तो कुछ ही दिनों में उसके शरीर में व्रण उत्पन्न होने लगते हैं तथा उसकी हड्डियाँ, गुर्दा, यकृत सभी प्रभावित होने लगते हैं। त्वचा, मुँह, दाँत, हड्डियों की संधियों पर सुखे घाव होने लगते है तथा नसे सुन्न होने लगती हैं और अंत में लकवा होजाता है।

रोग का निदानः

इस रोग का निदान प्रारम्भिक अवस्था यानि कि दो सप्ताह में आसानी से किया जा सकता है। इस रोग का जीवाणु ट्रेपोनिमा पैलीडम, पेनिसिलीन के प्रति काफी संवेदनशील होते हैं तथा एन्टीबायोटिक्स की उपस्थिती में मर जाते हैं। इस रोग से बचाव के उपाय हैं – वेश्यावृति पर पूर्ण रूप से रोक लगाना, समय–समय पर चिकित्सीय जाँच करवाना, रोगी व्यक्ति के साथ यौन सम्पर्क स्थापित न करना, विद्यालयों व महाविद्यालयों में यौन शिक्षा देना आदि।

III गोनोरिया (Gonorrohoeae):

यह रोग ग्राम निगेटिव बैक्टीरिया (Gram '-ve' Bactereia) नाइसिरिया गोनेरिये (Neisseria Gonohoeae) के कारण फैलता है। इस जीवाणु का विकास काल 2–10 दिनों का रहता है। इस रोग में मूत्र मार्ग की श्लेष्मिक कला, आँखो तथा स्वर यंत्र पर व्रण उत्पन्न होना, मूत्र त्याग करते समय असहनीय जलन, घाव में मवाद भर जाना, बुखार आना आदि हैं। इस रोग में स्त्रियों के मूत्र मार्ग से एक पीले रंग का स्त्राव निकलने लगता है। कुछ समय पश्चात् बिना उपचार के ही सारे लक्षण समाप्त हो जाते हैं परन्तु जीवाणु धीरे–धीरे स्त्री के गर्भाशय व फैलोपियन ट्यूब में प्रवेश कर संक्रमण फैला देते हैं जिससे स्त्रियों में बाँझपन हो जाता है।

रोग का निदानः

इस रोग का उपचार व रोकथाम भी सिफिलिस रोग की तरह ही किया जाता है।

महत्वपूर्ण बिन्दु :

1. यौन सम्पर्क से होने वाले रोग गुप्त या यौन रोग कहलाते हैं।
2. एड्स लाइलाज एवं संक्रामक रोग हैं। इस रोग से बचाव ही इलाज है।
3. एड्स, एच.आई.वी. (ह्यूमन इम्यूनो डेफिशियेन्सी वायरस) नामक विषाणु के संक्रमण से होता है। इस संक्रमण से मनुष्य के शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता समाप्त हो जाती है। फलस्वरूप वह विभिन्न संक्रामक रोगों से ग्रसित हो जाता है और अंत में ये रोग उसकी मौत का कारण बन जाते हैं।
4. रक्त के परीक्षण से एच.आई.वी. संक्रमण का पता लगाया जा सकता है। संक्रमित व्यक्ति को एच. आई.वी. पॉजिटिव कहते हैं।
5. एड्स असुरक्षित यौन संबंधों, संक्रमित रक्त चढ़ाने, संक्रमित सिरिंज या सुई के उपयोग, संक्रमित व्यक्ति के अंग का स्वस्थ व्यक्ति में प्रत्यारोपण या फिर संक्रमित माँ के होने वाले बच्चे वस्तनपान से फैलता है।
6. सामान्य रहन–सहन जैसे टेलीफोन, कम्प्यूटर, किताबें, बर्तन आदि का सहभागी रूप में प्रयोग करने से या शारीरिक स्पर्श जैसे हाथ मिलाना या साथ उठने–बैठने से एड्स नहीं होता।
7. एड्स से बचाव के लिए रोग को फैलाने वाले कारणों से बचना चाहिये। इससे बचने के मुख्य उपाय हैं :– सुरक्षित यौन संबंध, निसंक्रमित सुई, ब्लेड व सिरिंज का उपयोग, यौन रोगियों के साथ यौन संपर्क नहीं करना, एड्स पीड़ित महिला द्वारा गर्भधारण व स्तनपान नहीं कराना, केवल जाँच किया हुआ रक्त ग्रहण करना आदि।
8. यदि व्यक्ति एड्स संक्रमित है तो उसे ध्यान रखना चाहिए कि वह किसी और को संक्रमित न करे एवं स्वयं भी किसी बीमारी से संक्रमित न हो।
9. सिफिलिस व गोनोरिया क्रमशः ट्रेपोनिमा पैलीडम एवं नाइसिरिया गोनेरिये द्वारा फैलता है।
10. सिफिलिस व गोनिरिया का इलाज प्रारम्भिक अवस्था में आसानी से किया जा सकता है।
11. वेश्यावृति पर रोक, चिकित्सकीय जांच, संक्रमित व्यक्ति के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित न करके तथा यौन शिक्षा द्वारा इन रोगो से बचाव किया जा सकता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

i. एड्स रोग हैं :

(अ) संक्रामक (ब) असंक्रामक
(स) मानसिक (द) उपरोक्त में से कोई नहीं

ii. एच.आई.वी. विषाणु से फैलता है :
(अ) हिपेटाइटिस (ब) एड्स

(स) हर्पीज़ (द) डायरिया

iii. एच.आई.वी. संक्रमण किस कारण से फैलता है?

(अ) संक्रमित सुई के उपयोग से (ब) खाँसने से

(स) वायु से (द) साथ खाना खाने से

iv. सिफिलिस रोग फैलता है ?

(अ) ट्रेपोनिमा पैलीडम (ब) नाइसिरिया गोनेरिये

(स) कोई भी नही (द) उपरोक्त सभी

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

i) एड्स ..... के संक्रमण से होता है।

ii) एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति ..... वर्ष तक सामान्य जीवन जी सकता है।

iii) राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संस्थान ..... से कार्यरत है।

iv) गोनिरिया से पिड़ित स्त्रियों के मूत्र मार्ग से ..... रंग का स्त्राव निकलने लगता है।

3. एड्स और एच.आई.वी. पॉजिटिव में क्या अंतर है?

4. एच.आई.वी. संक्रमण कैसे फैलता है? इस संक्रमण से बचने के तरीके लिखिये।

5. सिफिलिस रोग की विभिन्न अवस्थाओं को समझाइये।

6. यौन रोग की रोकथाम कैसे करेंगे ?

उत्तरमाला :

1. (i) अ (ii) ब (iii) अ (iv) अ
2. (i) एच.आई.वी. (ii) 6–10 (iii) 1987 (iv) पीले